Topic 95

चतुर्थी विभक्ति - 3

क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म ।

सोपसर्गयोरनयोर्यं प्रति कोपस्तत् कारकं कर्म संज्ञं स्यात् । क्रूरमभिक्रुध्यति अभिद्रुह्यति वा ।

उपसर्गयुक्त क्रुध् और द्रुह् धातु के प्रयोग में जिसके प्रति कोप प्रदर्शित किया जाय वह कारक कर्मसंज्ञक हो । क्रूरम् अभिक्रुध्यति - इत्यादि उदाहरण में अभि उपसर्गविशिष्ट क्रुध् और द्रुह् धातुमें प्रयुक्त हैं, अतः क्रूरम् में कर्मसंज्ञा होजाने से द्वितीया प्रयुक्त होती है। एवमेव दुर्जनः सज्जनम् अभिक्रुध्यति, अभिद्रुह्यति वा । मन्दबुद्धिरयं तीव्रबुद्धिम् अभिद्रुह्यामि तं नाहं, अभिक्रुध्यति मां तु । मैं उससे द्रोह नहीं करता हूँ तो भी वह मुझ पर क्रोध करता है। विनैव कारणं क्रूरा अभिद्रुह्यन्ति सज्जनान् ।

राध्यीक्ष्योर्यस्य विप्रश्नः ।

एतयोः कारकं कर्मसंज्ञं स्यात्, यदीयो विविधः प्रश्नः क्रियते । कृष्णाय राध्यति ईक्षते वा । पृष्टो गर्गः शुभाशुभं पर्यालोचयति इत्यर्थः ।

राध् और ईक्ष् धातु का कर्मकारक सम्प्रदानसंज्ञक हो यदि उसके विषय में विविध प्रकार का प्रश्न किया जाय । कृष्णाय राध्यति - इत्यादि उदाहरण में जब कृष्ण के विषय में गर्गाचार्य से ज्योतिषसम्बन्धी विविध प्रश्न किये गये तब वे उनके शुभाशुभ की पर्यालोचना करते हैं अर्थात् गुण-दोष का विवेचन करते हैं। यही उदाहरण वाक्य का अभिप्राय है।

प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः पूर्वस्य कर्ता ।

आभ्यां परस्य शृणोतियोगे पूर्वस्य प्रवर्तनरूप व्यापारस्य कर्ता सम्प्रदानं स्यात् । विप्राय गाँ प्रतिशृणोति आशृणोति वा । विप्रेण मह्यं देहीति प्रवर्तितः प्रतिजानीते इत्यर्थः ।

प्रति और आङ् उपसर्ग से परे श्रु धातु के योग में पूर्वप्रवृत्ति करानेवाले व्यापार का कर्ता सम्प्रदान संज्ञक है । अतः विप्राय गाँ इत्यादि उदाहरण में विप्र ने किसी दानी को 'मुझे गाय दीजिए' यह प्रार्थना कर गाय देने के लिए प्रवृत्त कराया तब वह दानी उस विप्र के लिए गाय देने की प्रतिज्ञा करता है । यहाँ गाय देने के लिए दानी को प्रवृत्त कराने वाला विप्र है, अतः उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है । सम्प्रदान में चतुर्थी ।

अनुप्रतिगृणश्च ।

आभ्यां गृणातेः कारकं पूर्वव्यापारस्य कर्तृभूतं सम्प्रदानसंज्ञं स्यात् । होत्रेऽनुगृणाति, प्रतिगृणाति होता प्रथमं शंसति तमध्वर्युः प्रोत्साहयतीत्यर्थः

अनु और प्रति से परे गृ धातु का कारक यदि वह पूर्व व्यापार का कर्ता हो तो सम्प्रदान संज्ञक हो । होत्रे अनुगृणाति, प्रतिगृणाति — इस उदाहरण में होता प्रथम किसी मंत्र का उच्चारण करता है तब अध्वर्यु उसे पुनरुच्चारित कर प्रोत्साहित करता है ~~यहाँ होता~~ यह उदाहरण का भावार्थ है

होता मंत्र के प्रथमोच्चारण व्यापार को
ती है और अध्वर्यु उसके पुनरुच्चारण का।
यह पुनरुच्चारण का भाव अनुगृ और प्रतिगृ
के प्रयोग से स्पष्ट होता है।

परिक्रयणे सम्प्रदानमन्यतरस्याम्।

नियतकालं भृत्या स्वीकरणं परिक्रयणम्, तस्मिन् साधकतमं कारकं सम्प्रदानसंज्ञं वा स्यात्। शतेन, शताय वा परिक्रीतः।

किसी निश्चितकाल तक भृत्या का स्वीकार करना परिक्रयण कहलाता है, उसमें साधकतम कारक सम्प्रदानसंज्ञक विकल्प से है। शतेन, शताय वा परिक्रीतः इस उदाहरण में परिक्रयण का साधकतम शत है। उसमें सम्प्रदान संज्ञा हो जाने से चतुर्थी विभक्ति होती है तथा उसके अभाव पक्ष में करण में तृतीया भी होती है।

तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या (वा०)

मुक्तये हरिं भजति।

मुक्तये हरिं भजति — इस वाक्य का अर्थ यह है कि मुक्ति के लिए भक्त हरि को भजता है। यहाँ मुक्तये यह चतुर्थी तादर्थ्य में है, क्योंकि हरि भजन मुक्ति निमित्तक है।

क्लृपि संपद्यमाने च (वा०)

भक्तिर्ज्ञानस्य कल्पते जायते इत्यादि।

सामर्थ्य अर्थवाले क्लृप् धातु के तथा उस अर्थवाले अन्य धातु के प्रयोग में चतुर्थी विभक्ति होती है। भक्तिर्ज्ञानाय कल्पते — इस उदाहरण में 'ज्ञानाय' में चतुर्थी प्रयुक्त हुई है। भक्ति ज्ञान प्राप्त करने के लिए समर्थ होती है।